SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन

पंकज कुमार, शोधार्थी, शिक्षा संकाय
रामचंद्र चंद्रवंशी विश्वविद्यालय, विश्रामपुर, पलामू, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
पंकज कुमार

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 08/07/2023
Revised on : -----
Accepted on : 15/07/2023
Plagiarism : 02% on 08/07/2023

शोध सार

बालक जन्म लेने के बाद से ही अनेक परिस्थितियों का सामना करता है और विकासोन्मुख होता हुआ आगे बढ़ता है, इस प्रक्रिया में वह बहुत से अनुभव ग्रहण करता है। इस अनुभव ग्रहण करने में ही उसकी शिक्षा निहित होती है। जान लॉक ने मानवीय जीवन में शिक्षा के महत्व को स्वीकार करते हुए कहा है कि – ''पौधों का विकास कृषि से होता है और मनुष्य का शिक्षा द्वारा''। बालक की शिक्षा तथा उसका मानसिक विकास जन्म होने के बाद से ही प्रारम्भ हो जाती है। अतः जन्म से ही प्रत्येक बालक को एक पारिवारिक परिवेश प्राप्त होता है, यही से उसकी शिक्षा की शुरूआत होती है, इसलिए परिवार को बालक की प्रथम पाठशाला कहा जाता है और पारिवारिक वातावरण को बालक के सर्वांगीण विकास की आधारशिला। बालक अपना व्यवहार, आचार–विचार, नैतिकता आदि अपने परिवार की मान्यताओं के अनुसार निर्मित एवं विकसित करता है। शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना हैं, परन्तु इसमें पारिवारिक वातावरण की भूमिका मुख्य है।

मुख्य शब्द

परिवार, विद्यार्थी, शिक्षा, मानसिक.

प्रस्तावना

शैक्षिक विकास वह मानसिक अवस्था है जो व्यक्ति को किसी वस्तु या क्रिया की ओर ध्यान देने के लिये प्रेरित करती है। शैक्षिक विकास के मूल में यह सिद्धांत कार्यरत रहता है कि कोई भी दो व्यक्ति कभी भी समान नहीं हो सकते है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी रूचि के अनुसार विषयों का चयन कर सकता है और उसमें अपनी शिक्षा जारी रख सकता है इसलिए बालक की रूचि जिन विषयों में होगी उनमें उपलब्धि स्तर भी अच्छा रहेगा।

यदि परिवार में माता–पिता तथा अन्य सदस्य बालकों के प्रतिकूल तथा अपने अनुरूप बालकों को पढ़ाना चाहते है तो ऐसी परिस्थिति में बालकों की रुचियाँ प्रभावित होती है तथा उन पर अनायास शैक्षिक बोझ पडता है जिसके परिणामस्वरूप दूरगामी परिणाम निकलते है। जो माता–पिता तथा अन्य वयस्क स्वयं शिक्षा में रुचि लेते हैं तथा अपने बच्चों को भी इसके लिए उत्प्रेरित करते हैं, उस परिवार के किशोरों में शैक्षिक अभिरुचि अधिक पायी जाती है। लेकिन जिस परिवार में माता–पिता तथा अन्य वयस्क सदस्य शिक्षा में रुचि नहीं रखते हैं और न ही अपने बच्चों को इसके लिए प्रेरित करते हैं, इन परिवार के किशोरों में शैक्षिक रुचि का अभाव देखा जाता है व शैक्षिक रूप से पिछड़ जाते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ है व्यक्ति द्वारा अपनी भावानाओं, इच्छाओं, महत्वाकाँक्षाओं और आदर्शों को वास्तविक धरातल तक सीमित रखने और अपने आपको वातावरण के अनुसार ढ़ालने और उसके साथ समायोजन करने अथवा अपने वातावरण को अपने अनुकूल ढ़ालने और उसके साथ समायोजन की योग्यता। जब बालक का घरेलू वातावरण ऐसा होता है जहॉ उसे विशेष दुलार – प्यार, स्नेह, उसकी अधिकतर आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, तो ऐसे बालक का मानसिक स्वास्थ्य अच्छा होता है। यदि घरेलू वातावरण इसके वातावरण के विपरीत होते है, तो बालकों का मानसिक स्वास्थ्य संतोषजनक नहीं होता है और बालक अधिकतर तनावग्रस्त एवं चिन्तित दिखता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

परिवार का स्वस्थ वातावरण बालक की शैक्षिक विकास एवं मानसिक स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिए सहायक होता है और परिवार का स्वस्थ वातावरण ही बालक की उच्च एवं निम्न शैक्षिक विकास एवं मानसिक स्वास्थ्य की ओर अग्रसारित करता है और यही उसके भावी जीवन के विकास में सहायक हैं।

अतः शोधार्थी को प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक विकास एवं मानसिक स्वास्थ्य पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभाव देखने की आवश्यकता प्रतीत हुई है। प्रस्तुत शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष से स्पष्ट जानकारी प्राप्त हो सकेगी कि विद्यार्थियों की शैक्षिक विकास एवं मानसिक स्वास्थ्य पर उनके पारिवारिक वातावरण का क्या प्रभाव पड़ता है, यह जानकारी छात्रों अभिभावकों, शिक्षाविदों, मनोवैज्ञानिकों तथा समाजशास्त्रियों के लिए लाभप्रद सिद्ध होंगे जिससे सहयोगात्मक, सकारात्मक व स्वस्थ शिक्षण के लिए मार्ग प्रशस्त होगा तथा परिवारों में स्वस्थ वातावरण का विकास हो सकेगा।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

संदर्भित शोध से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से संबंधित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञानकोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से शोधकर्ता का अपनी समस्या का चयन परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। संबंधित शोध अध्ययन को भौगोलिक दृष्टि से दो भागों में प्रस्तुत किया जा सकता हैः

1. वह अध्ययन जो भारत में किया गया है।
2. वह अध्ययन जो विदेशों में किया गया है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में शोध अध्ययन

श्रीलक्ष्मीकान्त, एस.(2022) ने "उच्च माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक विकास का अध्ययन" किया, इस अध्ययन हेतु इन्होने 290 विद्यार्थियों का चयन किया जिनमें 147 छात्र तथा 143 छात्राएं सम्मिलित थी। आँकडो के संग्रह हेतु इन्होने डॉ. एस. पी. कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित शैक्षिक विकास प्रपत्र का उपयोग किया गया। अध्ययन के विश्लेषण हेतु सांख्यकीय विधियों में प्रतिशत, मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–परीक्षण का उपयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों में छात्र–छात्राओं की शैक्षिक विकास में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

कौर, एस (2021) ने "कक्षा 10 के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि व उनके व्यक्तित्व के कारकों के मानसिक स्वास्थ्य पर पडने वाले प्रभाव" का अध्ययन किया। इस अध्ययन हेतु इन्होने पंजाब राज्य के छः जिले से प्रतिदर्श का चयन किया। आँकड़ों को एकत्र करने के हेतु इन्होने राय (1994) द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ्य मापनी, आइजैंक

(1975) द्वारा निर्मित व्यक्तित्व इन्वेंट्री तथा राय (2006) द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण का उपयोग किया तथा आँकड़ों के विश्लेषण के लिये प्रोडेक्ट मूमेंट सहसम्बन्ध का प्रयोग किया। अध्ययन के निष्कर्षो में मानसिक स्वास्थ्य का संवेगात्मक बुद्धि व व्यक्तित्व के कारकों के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

नारंग, एस (2020) ने "कक्षा 10 में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक विकास का अध्ययन" किया, इस अध्ययन हेतु इन्होने 100 विद्यार्थियों का चयन किया जिनमें 50 छात्र तथा 50 छात्राएं सम्मिलित थी। आँकडो के संग्रह हेतु इन्होने वी. पी. बंसल तथा प्रो. डी. एन. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित शैक्षिक विकास प्रपत्र का उपयोग किया गया। अध्ययन के विश्लेषण हेतु सांख्यकीय विधियों में मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–परीक्षण का उपयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों में विभिन्न विषय वर्ग में छात्र–छात्राओं की शैक्षिक विकास में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सुलेखा (2019) ने "उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य का उनके अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" किया। इन्होंने माध्यमिक स्कूल के 200 विद्यार्थियों को रूप में सम्मिलित किया और पाया कि विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य का उनके अधिगम पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

राठौर, ए. (2018) ने "माध्यमिक स्तर शिक्षा के माध्यम का विद्यार्थियों की शैक्षिक विकास एवं समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन" किया। इस अध्ययन के लिए 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया जिसमें 25 छात्र तथा 25 छात्रायें अंग्रेजी माध्यम तथा 25 छात्र तथा 25 छात्रायें हिन्दी माध्यम की थी। इस अध्ययन के लिए डॉ.एस.पी. कुलश्रेष्ठ (2007) द्वारा निर्मित शैक्षिक विकास रिकार्ड और ए.के.पी. सिन्हा एवं आर.पी. सिंह द्वारा निर्मित समायोजन अनुसूची उपकरणों का उपयोग किया गया। अध्ययन में पाया कि शिक्षा के माध्यम का विद्यार्थियों शैक्षिक विकास एवं समायोजन पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

चौधरी, एस. के. (2016) ने "अनाथ किशोरावस्था के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन" किया। इनके अध्ययन का एक उद्देश्य अनाथ किशोरावस्था के बालकों के मानसिक स्वास्थ्य का उनकी शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना भी था। इन्होंने न्यादर्श में 9 से 15 वर्ष के उम्र के 52 लड़के व 28 लड़कियों को लिया। इनके अध्ययन में पाया गया कि अनाथ किशोरावस्था के बालकों का मानसिक स्वास्थ्य उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर ऋणात्मक प्रभाव डालता था।

शूद, पी. के. (2016) ने "बच्चों में पारिवारिक समस्याओं का उनके गृह वातावरण के सन्दर्भ में अध्ययन" किया। इस अध्ययन में इन्होंने गृह वातावरण का गुणात्मक अध्ययन किया। अपने इस अध्ययन में इन्होंने 74 बच्चों को न्यादर्ष के रूप में सम्मिलित किया जिसमें 40 लड़के और 34 लड़कियां थी। आँकडें एकत्र करने हेतु इन्होंने 20 एकाषों की स्वनिर्मित गृह वातावरण मापनी का प्रयोग किया। निष्कर्ष में पाया गया कि बालक तथा बालिकाओं के गृह वातावरण में सार्थक अंतर नही है तथा उम्र तथा लिंग के आधार पर बालक व बालिकाओं में उनके गृह वातावरण के सन्दर्भ में उनकी पारिवारिक समस्याओं में अंतर पाया गया।

कुमार, सी. (2015) ने "उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का सामाजिक अलगाव तथा उनके पारिवारिक वातावरण का अध्ययन" किया। इस अध्ययन के लिये इन्होने 491 न्यादर्ष को चुना जिनमें 253 छात्रायें व 238 छात्र थे। इनके द्वारा उपकरण का निर्माण किया गया। प्राप्त आंकडों के विश्लेषण हेतु सहसम्बन्ध विधि को प्रयोग किया गया। निष्कर्षो में विद्यार्थियों के सामाजिक अलगाव तथा उनके पारिवारिक पर्यावरण के उच्च नकारात्मक संबध पाया गया।

विदेशी में शोध अध्ययन

Joseph, C.K M.K, U.K, (2022) ने "हाईस्कूल के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन" किया। इस अध्ययन हेतु इन्होने 150 विद्यार्थियों को प्रतिदर्ष के रूप में सम्मिलित किया गया। आँकड़ों को एकत्र करने हेतु इन्होने ड्रोविड एवं अगस्टीन (1990) द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ्य इन्वेंट्री का उपयोग किया तथा आँकड़ों के विश्लेषण के लिये मध्यमान, मानक विचलन, टी–परीक्षण इत्यादि सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया। अध्ययन के निष्कर्षो में छात्राओं का मानसिक स्वास्थ्य छात्रों से अधिक अच्छा पाया गया तथा ग्रामीण विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य शहरी विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य की अपेक्षा अधिक अच्छा पाया गया परन्तु एकाकी परिवार तथा संयुक्त

परिवार के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में कोई अन्तर नहीं पाया गया।

Sacks, V.K etAl. (2021) एवं अन्य ने "पारिवारिक वातावरण और किशोरों की भलाई का अध्ययन" किया और इन्होंने अपने अध्ययन से 12 से 17 वर्ष तक बच्चों को सम्मिलित किया, इन्होंने अपने अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में पाया कि 65 प्रतिशत किशोर अपने माता – पिता से बहुत अच्छी तरह से संवाद कर सकते है, 50 प्रतिशत से कम किशोर अपने परिवार के साथ एक साथ रात का भोजन करते है, 10 प्रतिशत कक्षा 10 के छात्रों के माता–पिता को पता नही है कि वे विद्यालय के बाद क्या कर रहे है, संयुक्त अभिभावक में 50 प्रतिशत व एकाकी अभिभावक 40 प्रतिशत सप्ताह में एक बार ही सख्ती से व्यायाम करते है और ज्यादातर किशोर अपने परिवार के साथ मिलकर काफी अच्छी तरह से रह रहे है।

Alexander,S.k, C.k, P.k, (2021) ने "किशोरों के पारिवारिक वातावरण तथा आंतरिक तथा बाहरी व्यवहारों का अध्ययन" किया, न्यादर्श के रूप में इन्होंने 12–19 वर्ष तक किशोरों को सम्मिलित किया, आँकडों को एकत्र करने के हेतु इन्होंने मूस एवं मूस (1994) द्वारा निर्मित पारिवारिक वातावरण मापनी का प्रयोग किया, तथा प्राप्त आँकडों के विष्लेषण हेतु इन्होंने SPSS सॉफ्टवेयर प्रोग्राम का उपयोग किया। इनके अध्ययन के निष्कर्षो में पाया गया कि मापनी के सभी उपआयामों (संशक्ति, अभिव्यंजकता व द्वन्द्व, स्वतंत्रता, सक्रिय, अभिविन्यास, बौद्धिक, सांस्कृतिक अभिविन्यास सक्रिय मनोरंजन अभिविन्यास, नैतिक धार्मिक अभिविन्यास, नियंत्रण व संगठन) किशोरों के बाहरी व्यवहार को प्रभावित करते है तथा मापनी के उपआयामों में से 3 आयाम संशक्ति, अभिव्यंजकता व द्वन्द्व किशोरों के बाहरी व्यवहार के साथ–साथ आंतरिक व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

Halawah, I.k (2020) ने "विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा, पारिवारिक वातावरण, विद्यार्थी के चारित्रिक गुण का उनकी विद्यालयी उपलब्धि पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन" किया। अपने अध्ययन में निम्न निष्कर्ष प्राप्त किया– लिंग के आधार पर छात्र–छात्राओं की उपलब्धि में अन्तर नहीं था। विद्यार्थी के अभिप्रेरणा का माध्य स्तर अभिभावकीय प्रभाव के माध्य स्तर तथा उनके चरित्रिक गुणों से कम था। अभिप्रेरणा, पारिवारिक वातावरण, विद्यार्थी के चारित्रिक गुण तथा विद्यालयी उपलब्धि में निम्न किन्तु महत्वहीन या सार्थकहीन सहसम्बन्ध था। अभिप्रेरणा और विद्यार्थी के गुण में विशेष रूप (तौर) से उच्च सहसम्बन्ध पाया गया।

Levinson etAl.k, (2019) ने "जूनियर तथा सीनियर हाईस्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षिक विकास जानने हेतु एक शोध अध्ययन" किया। इस अध्ययन हेतु इन्होंने 85 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया, अपने अध्ययन के निष्कर्षो में इन्होंने पाया के विद्यार्थी की रूचि कलात्मक, सामाजिक एवं उद्यमी क्षेत्र में अधिक है।

Sowhney,S.k (2018) ने "पारिवारिक पर्यावरण के सन्दर्भ में किशोरों की शैक्षिक महत्वाकांक्षाओं का अध्ययन" किया। इस अध्ययन के लिये इन्होने कक्षा 9 के 17 विभिन्न विद्यालयों के 1000 छात्रों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया। इस अध्ययन के लिए उपकरण के रूप में शर्मा और गुप्ता द्वारा निर्मित शैक्षिक आकांक्षा मापनी, भाटिया और चड्ढा द्वारा निर्मित पारिवारिक पर्यावरण मापनी का प्रयोग किया गया। परिणामों में पाया गया कि पिता के व्यवसायों में विभिन्नता होने पर भी किशोरों के शैक्षिक महत्वकांक्षाओं में कोई अंतर नहीं था और इन्होने बताया कि जिन छात्रों के परिवार पारिवारिक द्वन्द से स्वतंत्र होते है, परिवार में उनकी परवाह की और उनकी बात सुनी जाती है, उन्हे चुनने की स्वतंत्रता होती थी, उन छात्रों में शैक्षिक महत्वाकांक्षायें पायी जाती है।

Petersen,A.k, C.,And Kellam,s.k, G.k, (2017) ने "बालकों की उपलब्धि इतिहास मानसिक स्वास्थ्य तथा पारिवारिक वातावरण का अध्ययन" किया, अपने इस अध्ययन हेतु इन्होंने कक्षा 7–8 के 570 विद्यार्थियों का चयन किया। आँकड़ों को एकत्र करने के लिये इन्होंने तीनों चरों के लिये अलग–अलग मानकीकृत परीक्षण का उपयोग किया। इनके अध्ययन के निष्कर्षों में पाया गया कि बालक की उपलब्धि इतिहास, मानसिक स्वास्थ्य तथा पारिवारिक पर्यावरण के द्वारा बालक की उपलब्धि और उसकी व्याख्या की जा सकती है।

Pegan, F.k (2016) ने "पारिवारिक वातावरण और किशोरों के सकारात्मक मानसिक अवस्थाओं अर्थात् खुशी, सुख, आशावाद तथा आशाओं का उनके सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन" किया इस अध्ययन हेतु इन्होंने 400 विद्यार्थियों (200 छात्र व 200 छात्राओं) को अपने शोध के न्यादर्श चुना जो भारतीय तथा ईरानी थे। उपकरण में

इन्होंने मूस और मूस (1994) द्वारा निर्मित पारिवारिक वातावरण मापनी, हिल तथा आरगाईल (2002) द्वारा निर्मित सुखी प्रश्नावली का प्रयोग किया। अध्ययन के निष्कर्ष में किशोरों की खुशी के साथ पारिवारिक वातावरण का सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित है:

1. प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों के पारिवारिक वातावरण का अध्ययन करना।
2. प्राथमिक विद्यालयों के छात्राओं के पारिवारिक वातावरण का अध्ययन करना।
3. प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।
4. प्राथमिक विद्यालयों के छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।
5. प्राथमिक विद्यालयों के छात्राओं के पारिवारिक वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य की पूर्ति हेतु निर्मित परिकल्पनाएँ निम्नलिखित है:

1. प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों एवं छात्राओं के पारिवारिक वातावरण में कोई अन्तर नही पाया जाएगा।
2. प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई अन्तर नही पाया जाएगा।
3. प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों के पारिवारिक वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर कोई प्रभाव नही पाया जाएगा।
4. प्राथमिक विद्यालयों के छात्राओं के पारिवारिक वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर कोई प्रभाव नही पाया जाएगा।

अध्ययन का परिसीमन

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने परिसीमा का निर्धारण इस प्रकार किया है:–

1. प्रस्तुत शोध के लिए पलामू जिले का चयन किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध के लिए पलामू जिले के अंतर्गत 20 विद्यालयों का चयन किया गया है।
3. प्रत्येक विद्यालय से 250 छात्र एवं 250 छात्राएं कुल 500 विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा।

शोध विधि

इस शोध प्रबंध में "पारिवारिक वातावरण के संदर्भ में प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक विकास एवं मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन" किया जायेगा। अतः आंकड़ों का संकलन प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखकर शोधकर्ता द्वारा वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है क्योंकि शोध अध्ययन में आँकडो का संग्रह सर्वेक्षण विधि द्वारा सहजतापूर्वक किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि द्वारा जनसंख्या से न्यादर्श लेकर शोध की समस्त प्रक्रिया में प्रतिस्थापित किया है।

प्रतिदर्श चयन विधि

न्यादर्श विधि के द्वारा एक विस्तृत समूह में से कुछ प्रतिनिधि पूर्ण इकाईयों का चुनाव किया जाता है। इसका चयन जनसंख्या से किया जाता है ताकि शोध द्वारा प्राप्त निष्कर्षों में अधिक प्रमाणिकता एवं वैधता प्राप्त की जा सकें।

शोध के उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है:

1. डॉ. अरून कुमार सिंह और डॉ. अल्पना सेन गुप्ता द्वारा निर्मित 'मानसिक स्वास्थ्य बैटरी'।

2. डॉ. करूणा शंकर मिश्रा द्वारा निर्मित 'होम इन्वायरमेंट इन्वेंटरी'।

प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त आँकडों के विश्लेषण हेतु एनोवा सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी सं. 1: प्राथमिक विद्यालय स्तर के विभिन्न पारिवारिक वातावरण वाले छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण का प्रसरण विश्लेषण

स्रोत	वर्ग योग	मुक्तांश	माध्य वर्ग योग	एफ–अनुपात	सार्थकता स्तर
समुहों के मध्य	20322.165	2	10161.083	19.883	.01 (2, 97)=4.82 सार्थकता स्तर पर सार्थक
समुहों के अन्दर	49572.275	97	511.054		
कुल	69894.440	99			

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

सारणी संख्या 01 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण के प्रसरण विश्लेषण से संबन्धित एफ मान 19.88 है जो कि .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है जिससे अध्ययन की शून्य परिकल्पना ''प्राथमिक विद्यालय के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर परिवारिक वातावरण का प्रभाव नही पड़ता है।'' निरस्त हो जाती है तथा शोध परिकल्पना ''प्राथमिक विद्यालय के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर परिवारिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है'' स्वीकृत हो जाती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि प्राथमिक विद्यालय के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर उनके परिवारिक वातावरण का प्रभाव अवश्य पडता है।

सारणी सं. 02: प्राथमिक विद्यालय स्तर के विभिन्न पारिवारिक वातावरण वाले छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण का मध्यमान तथा मानक विचलन

पारिवारिक वातारण	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
नकारात्मक	240	77.20	19.15
सामान्य	320	93.32	29.72
सकारात्मक	240	113.90	12.41
योग	800	94.66	26.57

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

सारणी संख्या 02 में तीनों प्रकार के परिवारिक वातावरण वाले छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमानों से यह स्पष्ट होता है कि नकारात्मक पारिवारिक वातावरण वाले छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण का मध्यमान 77.20, सामान्य पारिवारिक वातावरण वाले छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण का माध्यम 93.20 तथा सकारात्मक पारिवारिक वातावरण वालें छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण का माध्यम काफी उच्च 113.90 है, इससे यह स्पष्ट होता है कि प्राथमिक विद्यालय स्तर के छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य पर उनके पारिवारिक वातावरण का प्रभाव पडता है, जिससे उनकी अधिगम क्षमता प्रभावित होती है।

निष्कर्ष

प्राथमिक विद्यालय के छात्र छात्राओं का मानसिक स्वास्थ्य तथा परिवारिक वातावरण एक समान न होकर अलग–अलग होता है परन्तु छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई तुलनात्मक अन्तर नहीं होता है। छात्र एवं छात्राओं के पारिवारिक वातावरण सामान्य के साथ–साथ सकारात्मक या नकारात्मक भी होता है। नकारात्मक पारिवारिक वातावरण छात्र एवं छात्राओं के सामान्य के मानसिक स्वास्थ्य प्रतिकूल असर डालता है इसलिए बच्चों के सर्वागीण विकास के लिए पारिवारिक वातावरण का सकारात्मक होना आवश्यक है। बच्चे का पालन पोषण अच्छे पारिवारिक वातावरण में होना चाहिए, क्योंकि बच्चा जन्म लेने के बाद जिस परिवेश में प्रवेश करता है वह पारिवारिक वातावरण ही होता है, इसी वातावरण में उसके सर्वागीण विकास की पृष्ठभूमि तैयार की जाती है। प्राथमिक विद्यालय

के विद्यार्थियों को न ही बालक समझा जाता है न ही प्रौढ़ के रूप में स्वीकृति मिलती है क्योंकि बालक परिपक्वता की ओर अग्रसर होता है, यह अवस्था उसके लिए आँधी, तूफान और तनाव की अवस्था है। अतः उनको अपने माता–पिता से प्रेम, स्नेह एवं सोहार्द्र की परम आवश्यकता होती है, जिससे बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगिण विकास हो सके और स्वयं के लक्ष्य को निर्धारित कर सके। परिवारिक वातावरण बच्चों के मानसिक विकास, संवेगात्मक विकास, तार्किक विकास, चरित्रिक विकास आदि मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पूर्व में किये अध्ययनों के परिणाम इस तथ्य की पुष्टि करते है कि पारिवारिक वातावरण का प्रभाव मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है।

सन्दर्भ सूची

1. गुप्ता एस.पी., (2005): *आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन,* इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।
2. जियोबर्ट (1992): कुमलेटिव इफेक्ट आफुँमिली इनवायरमेन्ट आफन साइकोट्रिक, *जनरल ऑफ एडोलोसेंट हैल्थ,* Vol- 27, Page 34- 42.
3. आन्ने डब्लू. रिले तथा अन्य (2008): मेन्टल हेल्थ ऑफ चिल्ड्रेन, कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटीः पी.एच.डी.।
4. बुच एम.बी., (1983–1988): *शैक्षिक अनुसंधान का चतुर्थ सर्वेक्षण,* नई दिल्लीः एन.सी.ई.आर.टी।
5. सिंह अरूण कुमार, (2005): *शिक्षा मनोविज्ञान,* पटनाः भारती भवन।
6. पाण्डेय के. पी., (2005): *नवीन शिक्षा मनोविज्ञान,* वाराणसीः विश्वविद्यालय प्रकाशन।
7. अरडन तथा अन्य (2007): छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति एवं परिवार पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, *यूरेपियन जनरल साइकोलॉजी ऑफ एजूकेशन*।

****